सांध्य दैनिक

क्राईम स्टेरी

देहरादून, मंगलवार 23 मई 2017 (RNI No. UTTHIN/2009/30725) वर्ष 8, अंक 268 पृष्ठ 8 1.00 रूपये

त्रिवेन्द्र-सतपाल में 'टेंशन'

भोले महाराज से नजदीकियों पर महाराज नाराज?

देहरादून। उत्तराखण्ड में भाजपा की प्रचंड बहुमत वाली सरकार आने के बाद मुख्यमंत्री की दौड में सबसे आगे सतपाल महाराज व त्रिवेन्द्र रावत रहे लेकिन इस जंग में सतपाल महाराज त्रिवेन्द्र के भाजपा हाईकमान से नजदीकी के चलते उनके हाथ में राज्य की कमान आ गई और सरकार के मुखिया ने सभी मंत्रियों की जुबान पर नकेल लगाने के लिए मदन कौशिक को सरकार का प्रवक्ता नियुक्त कर यह संदेश दे दिया था कि सरकार के हर फैसले पर सिर्फ मदन कौशिक ही आवाम से रूबरू होंगे। हरीश रावत कार्यकाल में भोले महाराज व हरीश रावत के बीच नजदीकियों से हमेशा सतपाल महाराज नाराज दिखाई देते थे और जैसे ही राज्य में भाजपा की सरकार आई और सीएम की कमान त्रिवेन्द्र रावत के हाथों में आई तो एक बार फिर भोले महाराज व सरकार के मुखिया के बीच अचानक करीबी देखने को मिली तो उससे सतपाल महाराज कहीं न कहीं नाराज नजर आ रहे हैं? हैरानी वाली बात है कि सतपाल महाराज के पर्यटन मंत्री होने के बावजूद बद्रीनाथ में आई आपदा के बाद बचाव की जिम्मेदारी त्रिवेन्द्र रावत ने सतपाल महाराज को न देकर जिस तरह से मदन कौशिक को सौंपी थी उससे साफ नजर आ रहा है कि त्रिवेन्द्र रावत व सतपाल महाराज में पर्दे के पीछे से काफी टेंशन चल रही है और अगर यह टेंशन इसी तरह से आगे बढती रही तो विकास की उच्चाईयों पर राज्य को ले जाने के बडे-बडे दावे करने वाली सरकार आपसी गुटबाजी में ही युद्ध करती हुई नजर आयेगी?

उल्लेखनीय है कि सतपाल महाराज के भाई भोले महाराज व त्रिवेन्द्र रावत के बीच पुराना कोई रिश्ता व मिलन देखने व सुनने को नहीं मिला था लेकिन जैसे ही उत्तराखण्ड सरकार की कमान त्रिवेन्द्र रावत के हाथों में आई तो उन्होंने मुख्यमंत्री बनने की दौड में आगे बढने वाले सतपाल महाराज के भाई भोले महाराज से तेजी के साथ अपनी नजदीकियां बढानी शुरू कर दी और कुछ समय के कार्यकाल में ही भोले महाराज व त्रिवेन्द्र के बीच ऐसा मिलन देखने को मिलने लगा जैसे दोनो का वर्षों से मिलन होता आ रहा हो? भोले महाराज व त्रिवेन्द्र रावत के बीच बढती नजदीकियां सतपाल महाराज को काफी बेचैन किये हुए है और वह इस बात को लेकर भी कहीं न कहीं त्रिवेन्द्र रावत से खफा होंगे कि आखिरकार वह किस मिशन के तहत भोले महाराज के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रहे हैं? सतपाल महाराज को सरकार ने पर्यटन मंत्री का जिम्मा सौंपा गया लेकिन जिस तरह से सरकार के चंद वीआईपी कार्यक्रमों में मुख्यमंत्री ने सतपाल महाराज को उससे दूर रखा उससे साफ झलक गया था कि दोनो राजनेताओं के बीच कहीं न कहीं एक बडी टेंशन चल रही है? अगर त्रिवेन्द्र रावत और सतपाल महाराज के बीच सबकुछ ठीक होता तो बद्रीनाथ में रेल सर्वेक्षण के उद्घाटन में मुख्यमंत्री पर्यटन मंत्री को भी जरूर आमंत्रित करते क्योंकि सतपाल महाराज का ही ख्वाब था कि पहाड़ में रेल को चढ़ाया जाये। सतपाल महाराज की सरकार के वीआईपी कार्यक्रमों में दूरियां भी अब राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बनी हुई है। वहीं त्रिवेन्द्र रावत द्वारा अपने सभी मंत्रियों को मीडिया से दूर रखने के लिए उन्होंने जिस तरह से मदन कौशिक को सरकार का प्रवक्ता नियुक्त किया है उससे कहीं न कहीं सरकार के कुछ मंत्रियों में इस बात को लेकर नाराजगी बन रही होगी कि आखिरकार मीडिया के सामने उन्हें बोलने का अधिकार क्यों छीना गया है? मदन कौशिक सरकार के हर फैसले को मीडिया के सामने रख रहे हैं वहीं बद्रीनाथ में भी आई आपदा में सिर्फ मदन कौशिक ही आगे खडे दिखाई दिये ऐसे में सवाल खडे हो रहे हैं कि क्या सरकार के अन्दर सबकुछ ठीक चल रहा है या फिर ऐसी कोई राजनीतिक खिचडी पक रही है जिससे त्रिवेन्द्र रावत के सामने एक बडा संकट लाकर खडा किया जा सके?

रावत सरकार का हवाई सुशासन!

ईमानदार डीएम-एसपी के तबादले से कटघरे में जीरो टोलरेंस सरकार?

देहरादून। उत्तराखण्ड सरकार के मुखिया भ्रष्टाचार पर जीरो टोलरेंस के बडे-बडे दावे करते नहीं थक रहे लेकिन जिस तरह से उन्होंने खडिया व खनन माफियाओं के दबाव में आकर बागेश्वर के पूर्व डीएम व राजधानी की पूर्व एसपी देहात को हटाने के लिए हरी झण्डी दी उससे राज्य में त्रिवेन्द्र सरकार के सुशासन देने के बडे-बडे दावों पर ग्रहण लग गया और सवाल उठा कि अगर ईमानदार अफसरों को हटाना ही त्रिवेन्द्र सरकार का सुशासन है तो फिर राज्य में भ्रष्टाचार पर नकेल लगाने के पीटे जा रहे ढोल को बंद कर देना चाहिए?

गौरतलब है कि कुछ दिन पूर्व सरकार के ही एक वरिष्ठ मंत्री नौकरशाहों के बेलगाम होने और राजनेताओं को बरगलाने की बात कर रहे थे। ठीक उन्हीं दिनों बागेश्वर से आ रही खबर मंत्री के बयान और तमाम खबरों को झुठला रही थी। एक खबर थी बागेश्वर के डीएम रहे मंगेश घिल्डियाल की,और दूसरी राजधानी में एसपी देहात श्वेता चौबे की जिनके तबादलों ने सफेदपोशों को 'बेपर्दा' कर दिया। इस युवा आईएएस अधिकारी ने बतौर डीएम अपने तकरीबन सात महीने के कार्यकाल में ऐसी लोकप्रियता हासिल की, जो अफसरों के बारे में 'राय' बदलने को मजबूर करती है। मंगेश घिल्डियाल बागेश्वर जिले में आज बच्चे, महिला, बुजुर्ग हर किसी के लिए एक परिचित नाम है। आमजन से सीधा संवाद, समस्या का त्वरित निस्तारण और पारदर्शिता स ये वो प्रमुख कारण है, जिनके चलते मंगेश बागेश्वर में किसी के लिए 'देवता' तो किसी के लिए 'हीरो' हैं। प्रदेश के इतिहास में पहला ऐसा मौका रहा जब किसी डीएम के तबादले के विरोध में शहर दो दिन तक स्वतरूस्फुर्त बंद रहा, जनता सड़कों पर उतर आयी। जनप्रतिनिधियों को जन विरोध का सामना करना पड़ा। डीएम जब विदा होने लगे तो लोग रास्ते में गाड़ी के आगे लेट गए, खुद मंगेश घिल्डियाल को हटने की अपील करनी पड़ी थी। वहीं पीपीएस श्वेता चौबे ने जब हाई प्रोफाइल मामले आंचल पांधी में उन्होंने बिना दबाव में आये एक्शन लिया और राहुल पांधी को जेल भेजा तो कुछ सफेदपोशों, चंद आईएएस व आईपीएस अफसरों की आंखों में वह किरकिरी बन गई और राज्य में सुशासन देने का दम भर रहे मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र रावत ने ईमानदार अफसर श्वेता चौबे को एसपी देहात के पद से हटाकर साफ संदेश दे दिया कि राज्य में सरकार के मुखिया का सिर्फ चेहरा बदला है ना कि काम करने का अंदाज?

ऐक्ट्रेस रिया चक्रवर्ती ने पिज़्ज़ा छोड़कर सेक्स चुना

इस सप्ताह हाफ गर्लफ्रेंड में नज़र आईं बॉलिवुड तेलुगू ऐक्ट्रेस रिया चक्रवर्ती से फिल्मफेयर ने बातचीत की। उन्होंने पूछ गए मजेदार सवालों का बड़ा ही मजेदार जवाब भी दिया। रिया ने बताया कि उन्हें सेक्स या पिज़्ज़ा में से कोई एक छोड़ना हो तो वह सेक्स नहीं छोड़ सकतीं।

आपका हाफ बॉयफ्रेंड कौन है?

मेरे कई हाफ बॉयफ्रेंड्स हैं। मेरे कई ऐसे दोस्त हैं, जो फ्रेंड्स से ज्यादा और बॉयफ्रेंड से कम हैं। जैसे हम रोज बातें करते हैं, हर दिन ड्राइव पर जाते हैं और लाइफ से जुड़ी हर चीजें हम आपस में डिस्कस करते हैं।

4 बजे सुबह वाला फ्रेंड?

आदित्य रॉय कपूर। हम दोनों एक-दूसरे को सालों से जानते हैं। अगर मैं किसी ऐसे सिचुएशन में फंसी हूं कि मुझे 4 बजे सुबह किसी को कॉल कर उस प्रॉब्लम के बारे में बातें करनी पड़े तो वह आदित्य होगा।

हाल में जिन्हें आपने मेसेज भेजा हो?

श्रद्धा कपूर। हाफ गर्लफ्रेंड रिलीज़ हुई है, हमने फिल्म को लेकर डिस्कस किया।

सोशल मीडिया पर वह आखिरी इंसान, जिनको आपने चेज़ किया?

कटरीना कैफ। उन्होंने हाल ही में सोशल मीडिया जॉइन किया है। उनका लेटेस्ट पोस्ट मुझसे मिल हो गया था, तो जानना चाहती थी वह कर क्या रही हैं।

आप किसी लॉन्ग टर्म रिलेशन में नहीं हैं, आपको फिलहाल किसकी तलाश है?

मैं अगले कुछ सालों तक प्यार, किसी के साथ डेटिंग या शादी-वादी के चक्कर में नहीं पड़ना चाहती। और यदि मैं किसी के लिए इंटरेस्टेड होती भी हूं तो मैं यह नहीं उम्मीद करती कि वह मुझसे शादी करे। फिलहाल तो बिल्कुल नहीं।

क्या कहना पसंद करेंगी आप- मैं फिर कभी पिज़्ज़ा नहीं खाऊंगी या मैं फिर कभी सेक्स नहीं करूंगी?

यह मुश्किल सवाल है। चूंकि सेक्स जरूरी है, इसीलिए इन दोनों में चुनने को कहा जाए तो मैं कहूंगी कि सेक्स न करने की जगह मैं पिज्जा खाना छोड़ दूंगी। आप पिज़्ज़ा की जगह कोई और विकल्प जैसे बर्गर आदि खा सकते हैं, लेकिन सेक्स के लिए विकल्प के तौर पर आप क्या करेंगे?

एक ऐसी ऐक्टर जिनके साथ आप डेट पर जाना चाहेंगी?

रणबीर कपूर क्यों?

क्योंकि वह रणबीर कपूर हैं! वह हॉट हैं और मैं उनकी हर फिल्मों को उनके साथ डिस्कस करना चाहती हूं।

शर्मिंदगी वाली सबसे बड़ी घटना, जो आपके साथ घटी हो?

जब मैं 12वीं क्लास में थी तो मैं एक न्यू इयर ईव पार्टी अटेंड करने पहुंची। मैंने शॉर्ट स्कर्ट पहन रखी थी। तब मेरे पापा नॉर्थ इंडिया में पोस्टेड थे। तब ठंड का मौसम था और इसलिए वहां आग की व्यवस्था थी। जहां आग जल रही था, उसके ठीक सामने मैं खड़ी थी और मुझे पता ही नहीं चला कि मेरी स्कर्ट पीछे से जल गई थी।

आधी रात को मैं सबको विश करने डांस फ्लोर पर पहुंची। करीब 20 लोग मेरी तरफ ही देख रहे थे। मुझे लगा कि उनकी नजरें मेरी स्कर्ट पर हैं, लेकिन मुझसे किसी ने नहीं कहा कि मेरी स्कर्ट जल चुकी है। मैं पार्टी को गुडबाय कहकर घर की तरफ भागी और फिर मेरे पैरंट्स ने मुझे वापस पार्टी में जाने नहीं दिया।

कभी शराब के नशे में फोन कर किसी पर चिल्लाया?

हां। ये तो मैं हमेशा ही करती हूं। अगर मैं ड्रिंक कर लूं तो मैं कोई लोगों को फोन करती हूं। वह मेरा भाई या कभी-कभी मेरे पैरंट्स भी होते हैं जो कि काफी अजीब है। दोस्त तो इस लिस्ट में हमेशा ही शामिल हैं।

सबसे अडवेंचरस चीज जो आपने की हो?

हाल ही में श्रद्धा कपूर के साथ केप टाउन में हमने लंबी पदयात्रा की।

यदि आपको किसी सिलेब्रिटी के साथ लिवइन में रहने को कहा जाए तो वह कौन होगा?

ब्रैड पिट, फिलहाल वह सिंगल भी हैं।

आपका वन नाइट स्टैंड किसके साथ होगा?

वैसे तो मैंने यह कभी नहीं किया है और मैं जानना चाहूंगी हूं कि इसका मतलब क्या है। लेकिन, मुझे ऐसा करना पड़े तो वह होंगे बेन ऐफ्लेक।

आपका डेस्टिनेशन वेडिंग?

मॉलदीव या पैरिस।

इससे पहले इतनी खूबसूरत शायद कभी न दिखीं ऐश्वर्या राय

ऐश्वर्या राय के फैन्स को कान फिल्म फेस्टिवल में उनके पहुंचने का बड़ी ही बेसब्री से इंतज़ार था कि न जाने इस बार ऐश्वर्या किस लुक में नज़र आएंगी।

...और इंतज़ार आखिरकार खत्म हुआ और उनका कातिल लुक आपके सामने है। लहराते बाल हल्के नीले रंग का गाउन पहने 70वें कान फिल्म महोत्सव में वह किसी खूबसूरत राजकुमारी जैसी नजर आ रही थीं। विश्व सुंदरी रह चुकीं ऐश्वर्या इस ऑफ शोल्डर गाउन में बेहद दिलकश दिख रही थीं. इनकी खूबसूरती को बयां करने के लिए यहां जैसे शब्द कम पड़ रहे थे। मिस वर्ल्ड रह चुकीं ऐश्वर्या राय की खूबसूरती के दीवाने केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विदेश में भी हैं। ऐश्वर्या की खूबसूरती ही ऐसी थी कि सबकी निगाहें बस उनकी ओर ही टिकी थीं. इस बार जब वह रेड कार्पेट पर उतरीं तो जैसे सबकी आंखें फटी रह गईं। वह इतनी ज्यादा खूबसूरत दिख रही थीं कि कैमरे उनके सामने से हटने को पल भर भी तैयार नहीं थे। बिना जूलरी के इस परी सी ड्रेस में ऐश्वर्या गजब ढाह रही थीं। बता दें कि ऐश 16वीं बार इस कान फिल्म फेस्टिवल का हिस्सा बनी हैंऐश्वर्या की हर अदाएं रेड कार्पेट पर कातिलाना लग रही थीं। ...और हर पोज़ पर मानो इतरा और बलखा रही थीं ऐश्वर्या। पिछले साल ऐश्वर्या राय बच्चन कान फिल्म फेस्टिवल में पर्पल लिपस्टिक में लगाकर पहुंची थीं, जिसके बाद लोगों की मिली-जुली प्रतिक्रिया का उन्हें सामना करना पड़ा था। कइयों को उनका वह अंदाज़ पसंद नहीं आया था और ट्विटर पर उन्हें इस वजह से खूब ट्रोल भी किया गया। ऐसा लग रहा था जैसे सीधे आसमान से धरती पर उतरी हों ऐश्वर्या। ऐश्वर्या ने रेड कार्पेट पर हाथ जोड़कर सबका अभिवादन किया। ऐश्वर्या का यह लुक ऐनिमेशन फिल्म फ्रोज़न की ऐल्सा से प्रेरित दिखा, बल्कि उससे भी कई गुना ज्यादा खूबसूरत। ऐश्वर्या की इस ड्रेस का नेक लाइन काफी डीप था, जिसमें बेहद आकर्षक दिख रही थीं वह। बॉलिवुड अभिनेत्री ऐश्वर्या राय बच्चन 70वें कान फिल्म फेस्टिवल में पहली बार शुक्रवार को रेड कार्पेट पर नजर आईं। 43 वर्षीय ऐश्वर्या ने पाउडर ब्लू ब्रोकेड बॉलगाउन पहनकर रेड कार्पेट पर चहलकदमी की। माइकल सिंको द्वारा तैयार इस परिधान में ऐश्वर्या की खूबसूरती ऐसी निखरी कि देखने वालों की नजर ठहर जाए। यह परिधान संभालने में अन्य 5 लोगों की जरूरत पड़ी। ऐश्वर्या कान फिल्म समारोह में 16वीं बार शामिल हुईं।

कान्स में हाबिका का गाउन पहन मल्लिका ने बिखेरे जलवे

भारतीय अभिनेत्री मल्लिका शेरावत यहां कान्स फिल्म महोत्सव में लेबनानी फैशन डिजाइनर जार्ज हाबिका के गाउन में नजर आईं, जिसमें वह काफी अलग नजर आ रही थीं। 'मर्डर', 'डर्टी पिक्चर' और 'ख्वाहिश' जैसी फिल्मों में काम कर चुकीं मल्लिका ने गुरुवार को ट्विटर पर अपनी कान्स की लुक साझा की। महोत्सव के रेड कार्पेट से उन्होंने अपनी तस्वीर के साथ लिखा, ''ओपनिंग नाइट फेस्टिवल कान्स, जॉर्ज हाबिका, रेड कार्पेट कान्स 2017।'' डायर ने 40 वर्षीया अभिनेत्री मल्लिका का मेकअप किया और फ्रांसीसी लेब मेस्सिका के गहने पहने। मल्लिका ने फेस्टिवल के रेड कार्पेट से अपनी एक लघु वीडियो भी साझा की, जिसमें वह पोज देती नजर आ रही हैं। वीडियो के साथ उन्होंने लिखा, ''प्यारे गाउन के लिए जॉर्ज हाबिका का शुक्रिया। आपने मुझे राजकुमारी जैसा महसूस कराया। डायक का मेक अप, मेस्सिका के आभूषण।'' वर्ष 2014 की फिल्म 'भोपाल ः ए प्रेअर फॉर रेन' में अभिनय के लिए पहचानी जाने वाली भारतीय मूल के अंग्रेजी अभिनेत्री फागुन थक्रार को भी कान्स फिल्म महोत्सव के लिए आमंत्रित किया गया था।

सांध्य दैनिक
क्राईम स्टोरी
website: www.crimestory.in
देहरादून
मंगलवार, 23 मई 2017

इसलिए सैफ-बेबो ने तोड़ डाला को-स्टार्स को किस न करने का वादा?

रिपोर्ट की मानें तो साल 2012 में शादी के बाद करीना कपूर और सैफ अली खान ने तय किया था कि वे पर्दे पर अपने को-स्टार्स के साथ अब किसिंग सीन नहीं करेंगे। हालांकि, पिछले साल की कहानी कुछ और नज़र आई जब करीना ने फिल्म की ऐंड का के दौरान अर्जुन कपूर के साथ लिप लॉक सीन किया। यही नहीं, सैफ ने भी फिल्म रंगून के दौरान कंगना रनौत के साथ किसिंग सीन दिए। ...तो आखिर ऐसा क्या हुआ जो इन्होंने किस को लेकर अपने प्रॉमिस को तोड़ दिया? हाल ही में बातचीत के दौरान करीना ने इस राज से पर्दा उठाया। करीना ने बताया कि उनमें यह बदलाव सैफ की बेटी सारा अली खान की वजह से आया।

नरेन्द्र खत्री को अध्यक्ष पद से 'प्रेम'

शमशान घाट समिति का नहीं छोड रहे पद

देहरादून। प्रेमनगर शमशान घाट में अंग्रेजी शराब का ठेका खोले जाने के बाद जब केहरी गांव के लोगों ने विरोध के स्वर तेज किये और प्रेमनगरवासियों पर शराब का ठेका खुलवाये जाने का दाग लगाया तो प्रेमनगर की एक दर्जन संस्थाओं ने आपातकालीन बैठक बुलाकर समिति के अध्यक्ष से सवाल जवाब किये तो उन्होंने अपनी गलती स्वीकार करते हुए अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने का एलान किया और ठेका स्वामी को पैसे वापस लौटाने की बात कही तो इस मुद्दे पर बैठक बुलाई गई जिसमें शमशान घाट समिति के अध्यक्ष केा भी बुलाया गया लेकिन वह खुद तो बैठक में नहीं आये लेकिन उनके परिवार के चंद सदस्यों ने बैठक में पहुंचकर वहां अभद्रता का माहौल पैदा किया तथा ना तो इस्तीफा देने की बात कही और ना ही हिसाब किताब। बैठक में आई संस्थाओं ने समिति के अध्यक्ष के ना आने पर नाराजगी दिखाई और सर्वसम्मति से फक्कीर चंद को स्वर्ग आश्रम का अध्यक्ष घोषित कर दिया लेकिन नरेन्द्र खत्री ने पद से इस्तीफा देने से साफइंकार कर दिया जिस पर विवाद होना तय माना जा रहा है तथा इस मामले की गूंज डीएम के पास उठाकर स्वर्ग आश्रम में रिसीवर तैनात कराने का भी मंथन हो सकता है जिसके चलते नरेन्द्र खत्री से स्वर्ग आश्रम में आये सारे धन का हिसाब-किताब लिया जा सकता है।

उल्लेखनीय है कि पिछले कुछ दिनों से प्रेमनगर शमशान घाट में देशी शराब का ठेका खोले जाने को लेकर जबरदस्त बवाल मचा हुआ था और केहरी गांव व प्रेमनगरवासियों के बढते दबाव के चलते वहां चल रहे शराब ठेके को बंद करा दिया गया था तथा लाइब्रेरी में कुछ संस्थाओं के पदाधिकारियों ने

कुछ संस्थाओं ने फकीर चंद को बनाया अध्यक्ष

आपातकालीन बैठक बुलाकर समिति के अध्यक्ष नरेन्द्र खत्री से सवाल जवाब किये थे कि उन्होंने बिना किसी से पूछे कैसे शमशान घाट में शराब का ठेका खुलवाने के लिए हामी भरी थी। उस समय नरेन्द्र खत्री ने अपनी गलती स्वीकार की थी और उन्होंने अपने पद से इस्तीफा देने का खुला एलान किया था। संस्थाओं ने अध्यक्ष चुनने के दौरान तक नरेन्द्र खत्री को अध्यक्ष पद पर बने रहने का फैसला लिया था और 21 मई को बारात घर में बैठक बुलाने का आदेश जारी किया था। 21 मई को बारात घर में कुछ संस्थाओं के पदाधिकारी बैठक के लिए आये और नरेन्द्र खत्री का इंतजार करने लगे लेकिन वह बैठक में नहीं आये लेकिन उनके परिवार के कुछ लोग बैठक में आये और वहां उन्होंने अभद्रता और हंगामा शुरू कर दिया तथा साफशब्दों में कह दिया कि नरेन्द्र खत्री अपने पद से इस्तीफा नहीं देंगे। संस्थाओं के सामने नरेन्द्र खत्री के परिजनों द्वारा हंगामा किये जाने से यह मामला और तूल पकडता जा रहा है बैठक में संस्थाओं ने फक्कीर चंद को शमशान घाट का अध्यक्ष घोषित कर दिया। फक्कीर चंद को अध्यक्ष बनाये जाने पर नरेन्द्र खत्री व उनके चंद करीबी दावा कर रहे हैं कि वह अपने पद से नहीं हटेंगे। सवाल यह उठ रहे हैं कि आखिरकार शमशान घाट की राजनीति में ऐसा क्या है कि नरेन्द्र खत्री अध्यक्ष पद नहीं छोडना चाह रहे और ना ही आज तक का हिसाब-किताब संस्थाओं को बताने के लिए आगे आ रहे हैं। नरेन्द्र खत्री के आक्रामक रूख को देखते हुए यह सम्भावना भी जताई जा रही है कि कुछ संस्थायें इस मामले से डीएम को रूबरू कराकर शमशान घाट में रिसीवर बैठाने की तैयारी में जुट गये हैं और उनका मानना है कि जिस अध्यक्ष पर दाग लगा हो उसे अब किसी भी कीमत पर शमशान घाट का अध्यक्ष बनाकर नहीं रखा जायेगा। अब देखने वाले बात होगी कि क्या यह मामला कानूनी दाव-पेच में भी फंसेगा?

जनता को मजदूरी के नाम पर आखिर कब तक लुटा जाएगा!

कपिल मल्हौत्रा

अल्मोड़ा। कुमाऊ में लगातार पेंटर, कारपेंटर, राजमिस्त्री, मजदूर और नेपाली मजदूरों के द्वारा लगातार मनमाने तरीके से लेवर मूल्य लिया जा रहा है। कोई रेट मानक न होने के कारण जानता को मनमाने तरीके से मूल्य लिया जा रहा है। प्रशासन द्वारा कोई मूल्य तय नही किये जाने पर जनता भी अब आगे आने लग गई है। लगातार अल्मोड़ा में नेपालियों और बिहारी लेवर और मिस्त्रियों द्वारा आय दिन जिस तरह से मूल्य में वृद्धि या हर काम को ठेके में करने का कह कर जनता को मजबूर किया जा रहा है। नगर पालिका द्वारा इन लेवरो का कोई रजिस्टेशन नही किया जाता है और न ही कोई मानक ही नगर में तय किया गया है। अब जनता भी इसका विरोध करने लग गई है। यही नही प्रशासन भी आज तक इनका सही सत्यापन नही कर पाई है और ना ही इनके काम का कोई मानक बना पाई है जहाँ सरकार पालिका को निगम बनाने की बात कर रही है वही जनता को मजदूरों के मनमाने दामो के बोझ के नीचे दबना पद रहा है। जनता ने जिलाधिकारी को भी इसके लिए एक ज्ञापन दे कर जगाने की कोशिश की गई है। जनता ने ही एक केंद्र बना कर प्रीपेड मजदूरी की भी बात की है। लोगो का मानना है कि जब तक प्रशासन इन पर लगाम नही लगाएगा तब तक कोई भी मजदूर सही दाम में काम नही करेगा। जनता में चर्चा तो ये भी है कि पुलिस सत्यापन के नाम पर इन लोगो से पैसा ले कर खाना पूर्ति कर देती है इसी लिए चोरी की कोई भी घटना में कोई हल नही निकल पाता है अगर सत्यापन सही होगा तो किसी भी लेवर का पूरा लेखा जोखा पता चल जाएगा। कई बिहारी और नेपाली लेवर के तो वोटर कार्ड तक बन गए आखिर कहाँ से बिना सत्यापन के बन गए इनके यह वोटर कार्ड ? आखिर किसकी सहायता पर यह मनमाने मूल्य ले रहे है? पालिका, पंचायत और प्रशासन इनके नियम तय नही करती? श्रम विभाग दुकानों में काम करने वालो का तो रजिस्टेशन अनुवार्य करती है पर इस तरह के लेवर के समय यह विभाग कहाँ सो जाता है? क्यों नही दिखता है प्रशासन को ढुलाई करने वाले नेपालियों की मनमानी? जनता को क्यों आगे आना पड़ रहा है आखिर? क्यों सरकार इन पर लगाम नही लगाती? जो जनता वोट देती है उनका तो हर काम नियम से मांगती है सरकार, तो फिर लेवर जब जनता को लूटते है तो क्यों सब मौन हो जाते है? आखिर कौन बनाएगा इनके लिए नियम? कौन दिलाएगा जनता को इस तरह की मनमानी से निज़ात? पालिका में पैसा जमा कर टोकन की भी मांग कर रही है जनता, पर जो पालिका अपना ही काम नही कर पा रही है क्या वो जनता की इस मांग को पूरा कर पाएगी?

हमने जिलाधिकारी जी को ज्ञापन दे कर लगातार नेपालियों, बिहारियों और अन्य लेवरो के द्वारा जो मनमानी की जा रही है उसकी रोक के लिए बोलो है। जनता को हो रहे नुकशान के लिए सरकार और प्रशासन ने जल्द कदम नही उठाया तो जनता को आंदोलन भी करना पड़ा तो हम करेगी । लगातार हो रही चोरी की घटना में अगर सत्यापन सही होगा तो उसका भी खुलाशा जल्दी होगा पर सत्यापन भी सही तारीकी से नही होता है। सही काम नही होने के कारण ही यह लोग मानमानी कारते है।

बिट्टू कर्नाटक, संयोजक,
अल्मोड़ा विकास मंच

पीड़ित परिवारों की सुरक्षा को किया प्रदर्शन

नगर संवाददाता

देहरादून। भारतीय शूद्र संघ के कार्यकर्ताओं ने उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों मुख्यत: सहारनपुर के ग्राम शबीरपुर, बडगांव, सडक दूधली, मिर्जापुर, बवैल बुजुर्ग तथा दरियापुर आदि ग्रामों के दलितों के साथ घटी जाति आधारित दिल दहलाने वाली घटनाओं के पीडित परिवारों की सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं जीवन यापन संबंधी संसाधन उपलब्ध कराये जाने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया ओर जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा।

यहां भारतीय शूद्र संघ के कार्यकर्ता जिलाध्किारी कार्यालय में इकटठा हुए और वहां पर उन्होंने उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों मुख्यत: सहारनपुर के ग्राम शबीरपुर, बडगांव, सडक दूधली, मिर्जापुर, बवैल बुजुर्ग तथा दरियापुर आदि ग्रामों के दलितों के साथ घटी जाति आधारित दिल दहलाने वाली घटनाओं के पीडित परिवारों की सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं जीवन यापन संबंधी संसाधन उपलब्ध कराये जाने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया ओर जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। उनका कहना है कि अनुसूचित जातियों के विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों की एक संयुक्त बैठक डा. भीमराव अंबेडकर भवन सेवला कला में आयोजित की गई जिसमें रोष व्यक्त करते हुए जानकारी दी गई है क जब से केन्द्र व विभिन्न राज्यों में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है तब से जाति तथा धर्म आधारित उपद्रव बढे है और सहारनपुर में राजपूतों तथा दलितों के बीच जाति आधारित उपद्रव उसी का परिणाम है जिसमें निहत्थे दलितों पर धारदार हथियारों से हमला कर उन्हें घायल किया गया और कुछ लोग लापता है और नौकरी पेशा वालों को निलंबित कर दिया गया है। यह दुख की बात है।उनका कहना है कि उपद्रवों से प्रभावित ग्रामों के पीडित दलितों के विरूद्ध शासन प्रशासन का रवैया न केवल एकतरफा रहा है बल्कि उनके हितों के विरूद्ध सारी की सारी कार्यवाही की जा रही है जिससे वैमनस्य की भावना बढ़ने की आशंका बनी हुई है और उनको न सुरक्षा उपलब्ध करायी जा रही है और न चिकित्सा एवं जीवन यापन संबंधी सुविधायें ही उपलब्ध कराई जा रही है जबकि ऐसे में शासन प्रशासन का मुख्य कार्य उक्त सुविधायें उपलब्ध कराकर शांति व्यवस्था कायम कर कानून का शासन स्थापित करना होगा।

चारधाम यात्रा व्यवस्था मे सुधार के लिए गढवाल आयुक्त को प्रेषित किया पत्र

ऋषिकेश। उफान पर चल रही चारधाम यात्रा के बावजूद तमाम व्यवस्थाए बुरी तरह से लडखड़ा रखी हैं।प्रशासनिक लापरवाहियो का खामियाजा तीर्थाटन पर आये श्रद्वालूओ को भुगतना पड़ रहा है।इस ममले को जोरदार तरीके से उठाते हुए देवभूमि उतरांचल उधोग व्यापार मण्डल के अध्यक्ष राजकुमार अग्रवाल ने गढवाल मण्डल के आयुक्त का ध्यान विभिन्न बिन्दुओ की ओर दिलाते हुए एक पत्र प्रेषित किया है।प्रेषित पत्र के माध्यम से व्यापारी नेता अग्रवाल ने बताया कि इस वर्ष चारधाम यात्रा भगवान बद्रीनाथ भरोसे चल रही है।श्रद्वालूओ की जबरदस्त भीड़ यात्रा के लिए उमडने से हजारो यात्री बसो की किल्लत की वजह से ऋषिकेश मे अटके हुए हैं,जिसकी वजह से उनका पूरा बजट गड़बड़ता जा रहा है।प्रशासन को शीघ्र अति शीघ्र पर्याप्त बसो का इंजाम कर यात्रियो को चारधाम के लिए रवाना कराना चहिए।ऋषिकेश के बीमार पड़े राजकीय चिकित्सालय मे तुरंत चिकित्सीय व्यवस्था को सुधारने के लिए ठोस कदम उठाए जाए ताकी पहाडी मार्गो पर किसी भी दुघर्टना की सूरत मे आपात स्थितियो से निपटा जा सके।यात्रा को देखते हुए यातायात व्यवस्था मे सुधार के लिए ऋषिकेश,मुनि की रेती और लक्ष्मण झूला पुलिस के बीच एक नोडल अधिकारी नियुक्त करके सामंजस्य स्थापित किए जाने की मांग गढवाल आयुक्त से की गई है।

सम्पादकीय

दरोगाओं के थानों में इंस्पेक्टर क्यों?

उत्तराखण्ड के पुलिस महकमें में इन दिनों आपसी तलवारें खिची हुई दिखाई दे रही हैं और सवाल उठ रहे हैं कि आखिरकार जब उच्च न्यायालय व पुलिस मुख्यालय ने थानों में इंस्पेक्टरों को तैनात करने से रोकने के लिए आदेश दिये हुए हैं तो फिर आदेशों को हवा में उडाकर चंद जिलों के पुलिस कप्तान आखिरकार क्या संदेश देने की कोशिश कर रहे हैं? बता दें कि उत्तराखण्ड में वर्षों से जनपदों के कुछ कप्तान नियम-कानून को ताक पर रखते आ रहे हैं और अपने हिसाब से ही वह थाने व कोतवालियों में तैनाती करने के लिए आगे आये हैं। कुछ वर्षों से देखने में आता रहा है कि अगर कोई दरोगा पुलिस कप्तान का काफी करीबी होता था तो उसे थानेदार बनाने के बजाए कोतवाली में कोतवाल के पद पर तैनात कर दिया जाता था जिसके चलते जिलों में खाली बैठे कोतवाल काफी मायूस रहते थे और उनमें इस बात को लेकर काफी आक्रोश रहता था कि अगर कोतवालियों में भी दरोगाओं को तैनात करना है तो फिर उन्हें जिले में तैनात करने का औचित्य क्या है। उच्च न्यायालय व पुलिस मुख्यालय ने आदेश जारी किये हुए हैं कि किसी भी थाने में कोतवाल को तैनात नहीं किया जायेगा लेकिन चर्चा है कि उत्तराखण्ड के कुछ जिलों में थानेदारों के थाने में कोतवालों को तैनात किया हुआ है जिसके चलते थानेदार बनने की चाहत रखने वाले दरोगाओं के मन में एक अलग दर्द देखने को मिल रहा है और उनका मानना है कि वह विभाग में बगावत नहीं कर सकते क्योंकि वह अनुशासित पुलिस फोर्स के लोग हैं लेकिन थानों में कोतवालों की तैनाती पर रोक लगाने के लिए पुलिस मुख्यालय को भी आगे आना चाहिए लेकिन पुलिस मुख्यालय सबकुछ देखते हुए भी खामोश है। हैरानी वाली बात है कि पुलिस मुख्यालय ने सभी जिलों के पुलिस कप्तानों को आदेश किये थे कि दरोगा से जो इंस्पेक्टर बने हैं उन्हें कोतवालियों में तैनाती न दी जाये और उन्हें पुलिस विभाग की शाखाओं में तैनात किया जाये तथा वहां कोई पद खाली न हो तो जनपद में कार्यालयों के अन्दर उन्हें तैनात किया जाये। पुलिस मुख्यालय का यह आदेश चंद जनपदों में तो तार-तार होता हुआ दिखाई दे रहा है और कुछ जिलों के दरोगाओं में इस बात को लेकर बडी नाराजगी है कि जब थानेदार बनने का उनका समय आया तो थानों में कोतवालों की तैनाती की जा रही है। पुलिस मुख्यालय मौनी बाबा बना हुआ है और उसके आदेश सिर्फ कमजोर पुलिस अफसरों पर ही चलते हुए दिखाई देते हैं क्योंकि अगर पुलिस मुख्यालय के आदेश कुछ जनपदों में हवा-हवाई हो रहे हैं तो उसके जिम्मेदार भी वहीं पुलिस अफसर हैं जो तबादलों को लेकर नियम कानून बना रहे हैं। पुलिस के दर्जन दरोगाओं में इस बात को लेकर भी बडी हैरानी है कि जब राजधानी में ही पुलिस मुख्यालय के आदेश ध्वस्त हो रहे हैं तो और जनपदों में तो उनके आदेश का क्या पालन हो रहा होगा इसका अंदाज अपने आप लगाया जा सकता है। चर्चा के अनुसार देहरादून, हरिद्वार, पौडी, उधमसिंहनगर में भी कुछ इंस्पेक्टरों को थानों में तैनात किया हुआ है जिससे थानाध्यक्ष बनने का सपना देखने वाले दरोगाओं में बडी मायूसी देखने को मिल रही है और उनका मानना है कि अगर पुलिस मुख्यालय के आदेश हवा हवाई होने हैं तो फिर ऐसे पुलिस मुख्यालय का औचित्य क्या है?

बिटटू भाई को दी अनेक संगठनों ने अपनी श्रद्धांजलि

नगर संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की सबसे बडी सेवा करने वाले सिनेमेटोग्राफर, फोटोग्राफर, तकनीकी निर्देशक महेन्द्र सिंह डंग बिटटू भाई को अनेक संगठनों ने अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके साथ बिताये हुए पलों को याद किया।

यहां परेड ग्राउंड स्थित उत्तरांचल प्रेस क्लब में विभिन्न संगठनों से जुडे हुए कार्यकर्ता, फिल्म निर्माता निर्देशक, बिटटू भाई के परिचित व परिवार के सदस्य इकटठा हुए और वहां पर उन्होंने उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर जन कवि डा. अतुल शर्मा ने कहा है कि उनके साथ काम करने से अलग ही आनंद की अनुभूति होती थी और उन्होंने उनके साथ काम किया और वह सरल व सुशील व्यक्तित्व के धनी थे। उनका कहना है कि उत्तराखंड में पहली बार फिल्म प्रोडक्शन में डिजिटल टैक्नोलॉजी को बिटटू भाई ने स्थापित किया था। उनका कहना है कि राज्य में वीडियो एलबम एवं फिल्म निर्माण के संस्थापकों में वह शामिल रहे। इस अवसर पर अन्य वक्ताओं ने उनके साथ बिताये हुए पलों को याद करते हुए उनका संस्मरण किया। इस अवसर पर अनेक संगठनों के प्रतिनिधि मौजूद थे।

मैनचेस्टर आंतकी हमलों की निंदा

नगर संवाददाता

देहरादून। मानवाधिकार एवं सामाजिक न्याय संगठन ने ब्रिटेन के मैनचेस्टर में हुए आतंकी हमलों की कड़े शब्दों में निंदा की है और हमले में मारे गये नागरिकों के प्रति संगठन ने शोक व्यक्त किया।

यहां संगठन की प्रदेश अध्यक्ष मधु जैन ने एक बयान में कहा है कि ब्रिटेन के मैनचेस्टर में हुए आतंकी हमलों की कड़े शब्दों में निंदा की है और हमले में मारे गये नागरिकों के प्रति संगठन ने शोक व्यक्त करते हुए उनकी आत्मा को शांति मिले और जो लोग घायल हुए है उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की गई।

उनका कहना है कि उत्तराखंड और भारत के लोगों की संवेदना मैनचेस्टर में हुए आतंकी हमले हुए और मरने वाले लोगों के साथ है यह मानवता के अस्तित्व को तार तार करने वाला हमला है। उनका कहना है कि संगठन ब्रिटेन के मैनचेस्टर की सरकार से अनुरोध किया है कि जो भी आतंक फैलाने वाले आतंकियों के खिलाफकडी से कडी कार्यवाही होनी चाहिए जो देश ऐसे लोगों को सपोर्ट करता है पूरे विश्व को आतंकवाद के खिलाफएक साथ खडा होना चाहिए और जो भी देश आतंकवाद का समर्थन करता है उसके खिलाफभी कार्यवाही की जानी चाहिए।

-: कार्यालय पता :-
विंडलास शौपिंग काम्पलैक्स
(एमबैस्डर होटल)
शॉप नं. 38, नियर
धारा चौकी, देहरादून (यू.के.)

7 चीजें उड़ा सकती हैं आपकी नींद

रात में आपकी बार-बार नींद टूटती है? कितनी ही देर बिस्तर पर लेट लें, सपनों की दुनिया में खोने का चांस नहीं मिलता। और अगर नींद आ भी जाए, तो यह गहरी नहीं होती। अगर इन सभी बातों का जवाब हां है, तो आपको स्लीप सिंड्रोम की प्रॉब्लम है।

93 फीसदी लोग नींद न आने से परेशान

एक सर्वे के मुताबिक, इंडिया में 93 फीसदी लोग नींद न आने की प्रॉब्लम से परेशान हैं और 58 फीसदी लोगों के रुटीन पर नींद पूरी न होने का इफेक्ट सीधा पड़ता है। फिजिशियन डॉ. सरिका कहती हैं, %नींद दो तरह की होती है। गहरी नींद यानी नॉन पिड आई मूवमेंट स्लीप और कच्ची नींद, जिसे सपनों वाली नींद भी कहते हैं। अगर नॉन पिड आई मूवमेंट स्लीप 5 घंटे की भी आ जाए, तो बॉडी रिलैक्स हो जाती है, लेकिन कच्ची नींद भले ही 8 घंटे की हो, वह बॉडी को रिलैक्स नहीं करती है। वह बताती हैं कि आमतौर पर नींद न आने की वजह होती हैं टेंशन और डिप्रेशन।% इसके अलावा, लाइफस्टाइल और बॉडी पेन भी नींद न आने की वजह बनता है। क्रिटिकल केयर डिपार्टमेंट के हेड डॉ. संजय अरोड़ा कहते हैं कि अवेयरनेस न होने से लोग इसे मामूली चीज समझते हैं और डॉक्टर से कॉन्टैक्ट नहीं करते। दरअसल, सही तरह से नींद न आना कई बीमारियों की वजह बन सकती है।

जब मन किया, तब सो गए

सोने का समय फिक्स नहीं रखते। कभी 10 तो कभी 11, जब मन किया, सो गए। इसके अलावा, रात को प्रॉपर नींद न आने की वजह एक खास वजह दिन में लंबे समय तक सोना भी है। यह

तय है कि अगर आप दिन में कई घंटे सो जाएंगे, तो रात को प्रॉपर नींद कतई नहीं आने वाली। अगर दिन में सोना ही है, तो 20 मिनट काफी हैं।

देर रात टीवी देखना

सोते समय टीवी देखना अवॉइड करें, क्योंकि टीवी पर चल रहे प्रोग्राम्स का काफी असर आपकी नींद पर पड़ता है। बजाय इसके अगर आप सोने से पहले 15 से 20 मिनट बुक रीडिंग की आदत डाल लेंगे, तो आपको अच्छी नींद आएगी। स्टडीज के मुताबिक, सोने जाने से पहले टीवी पर कोई हॉरर प्रोग्राम या सेड सीन देखने से भी नींद उड़ जाती है।

हैवी स्टमक

अगर आप भी सोने से पहले एक कप कॉफी या चाय पीने के शौकीन हैं, तो अब इससे तौबा करें। दरअसल, कैफीन नींद को लाने की जगह भगा देती है। अगर आप रात को हैवी मील लेते हैं और वो भी ठीक सोने से पहले, तो तय है कि आप अपने लिए बिन बुलाई आफत ला रहे हैं। हैवी स्टमक रहने से आप तो रातभर अनईजी रहेंगे ही, साथ ही आपके डाइजेस्ट सिस्टम को भी एक्स्ट्रा काम करना पड़ेगा।

हैवी वर्कआउट

हैवी वर्कआउट भी नींद न आने की वजह बनता है। डॉक्टर्स के मुताबिक, रोजाना आधा घंटे की एक्सरसाइज ही काफी है। इससे आपके मसल्स व जॉइंट्स का वर्कआउट होगा और आपको अच्छी नींद आएगी। सोने से पहले गर्म पानी से नहाएं। दरअसल, हॉट बॉथ टेंशन देने वाली मसल्स को रिलैक्स करता है।

हेक्टिक शेड्यूल

कई बार अपने हेक्टिक शेड्यूल के चलते भी आपको प्रोपर नींद नहीं आ पाती। बार- बार ध्यान उन चीजों की तरफ जाता है, जो आपकी पेंडिंग होती हैं। स्लीप एक्सपर्ट्स के मुताबिक, सुबह उठकर टीवी और कंप्यूटर में बैठने के बजाय रीडिंग और मेडिटेशन करें। यह आपमें कामों को लेकर एकाग्रता लाएगा। ऐसी सिचुएशन में बेडरूम का टेंपरेचर भी कूल होना जरूरी है।

मैरिड लाइफ की प्रॉब्लम्स

हालैंड में की गई एक रिसर्च के मुताबिक, एक खुश मैरिज लाइफ रुटीन में आने वाली कई प्रॉब्लम्स को खत्म कर देती हैं। लेकिन अगर यह उलझनों से भरी है, तो आपको नींद नहीं आएगी। इसके अलावा, अगर बच्चा छोटा है, तो वह रात को कई बार उठता है, जिससे नींद बार- बार खुलती है। धीरे- धीरे यह आदत में आ जाता है, जो नींद पूरी न होने की वजह बनता है।

मेडिकल इश्यू

कई बार हेल्थ प्रॉब्लम्स के चलते भी आप अनिंद्रा के शिकार हो जाते हैं। थ्रोट इन्फेक्शन, हार्ट प्रॉब्लम्स, किसी वजह से दर्द और सर्दी- जुकाम जैसी प्रॉब्लम्स के चलते भी लंग्स में प्रोपर हवा पास नहीं पहुंच पाती, जिससे बार- बार नींद टूटती है।

उम्र की वजह से

हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक, अगर आपकी उम्र 50 से 60 साल के बीच है, तो आपकी नींद बच्चे की तरह नहीं हो सकती। इस उम्र में नींद कच्ची होती है और कई बार खुलती है। इसलिए यह सोचकर परेशान न हों कि आपको नींद नहीं आती।

ब्यूटी फुड्सः पाएं चेहरे पर गुलाबी नूर

गुलाबी निखार और खूबसूरत चेहरे की ख्वाहिश हर किसी की होती है। पर आज कल भाग दौड भरी जिंदगी अनियमित खाना की वजह से चेहरे की चमक फीकी पडती जा रही है। त्वचा की खास देखभाल करें। कैसे! तो आइये जानतें हैं कि प्रकृतिक चीजें जैसे-दही, टमाटर, सेब, स्ट्रोबेरी खास फल और ताजी पत्तियों में ही चेहरे पर नूर लाने का काम करते हैं। कई और भी बातें हैं, जो आपके सच्चे सौंदर्य को पूरी तरह उभारने में मदद करती हैं। तो बस इन ब्यूटी फूड्स को अपने डायट में शामिल करें।

सबसे पहले तो आप तेज धूप के संपर्क में कम से कम आएं। जब भी आप धूप में निकले तो चेहरा को ढक्कर लें या फिर छतरी का इस्तेमाल करें।

सेब-:

सेब भी एंटीऑक्सीडेंट है और यह धूप से स्किन का बचाव करता है। खासतौर से यह स्किन कैन्सर उत्पन्न करनेवाली खतरनाक किरणों से स्किन को बचाता है।

स्ट्रॉबेरीज-:

ये विटामिन सी से भरपूर होती हैं। विटामिन सी आपकी स्किन को झुर्रियों से बचाकर हमेशा जवां बनाए रखने में मददगार है। विटामिन सी कोलैजन के निर्माण में सहायक होता है, जो स्किन को सूर्य की तेज किरणों के बुरे प्रभाव से बचाता है। अमेरिकन जरनल ऑफ क्लीनिकल न्यूट्रिशन के रिसर्च के मुताबिक स्ट्रॉबेरीज एंटी एजिंग तो हैं ही, ये बढती उम्र के साथ स्किन पर आने वाले रूखेपन से भी छुटकारा दिलाती हैं।

गुलाबजल-:

गुलाबजल की एक बोतल हमेशा साथ रखें और 1-2 घंटों के बाद इसे अपने चेहरे पर स्प्रे करती रहें। खासतौर पर जब आप देर तक एयरकंडीशंड वातावरण में रहें, क्योंकि इससे त्वचा रूखी और बेजान हो जाती है।

दही-:

रोजाना एक कप दही के सेवन से स्किन के दाग-धब्बे व झाइयों से मुक्ति मिलती है। दही में जिंक और कैल्शियम होता है, जो सेहत और सौन्दर्य दोनों ही के लिए काफी फायदेमंद है।

कैस्टर ऑयल-:

झुर्रियां हटाने में कैस्टर ऑयल बहुत उपयोगी है। रोजाना अपने चेहरे पर कैस्टर ऑयल लगाना न भूलें। इससे आप की त्वचा मुलायम और चमकदार बनेगी।

टमाटर-:

दरअसल टमाटर को लाल रंग देनेवाले तत्व में आपकी स्किन को नर्म, मुलायम और कोमल बनाए रखने के गुण भी पाए जाते हैं। रिसर्च

के मुताबिक जिन लोगों की स्किन पर टमाटर को लाल रंग प्रदान करनेवाले तत्व की मौजूगी ज्यादा पाई गई, उनकी स्किन अन्या लोगों की तुलना में काफी कोमल थी।

नट्स-:

तमाम तरह के नट्स, चाहे बादाम हों, अखरोट या फिर पहाडी बादाम, ना सिर्फ आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाते हैं, बल्कि फैट्स को कम करके आपको स्लिम बनाने में भी मदद करते हैं, क्योंकि इनमें अमीनो एसिड्स की भरपूर मात्रा होती है, जो कोलेस्ट्रॉल को भी कम करता है।

किस मोड़ पर गुम हो गया पंजाबियत का 'जुनून'

कुमांऊ। उत्तरांचल पंजाबी महासभा के पूर्व प्रदेश सचिव सुभाष तनेजा ने फ्रि अपनी आवाज को बुलन्द करते हुये पंजाबियत की गिरती साख की दर्द को सांझा किया। प्रदेश अध्यक्ष बनने से पहले पंजाबियत का जो जुनून जवालामुखी की तरह पंजाबियत के लिए धधक रहा था वो ना जाने किस मोड पर आकर क्ंयो, कंहा और कैसे गुम हो गया।

पंजाबियत के लिए तराई के शेर के नाम से पुकारे जाने वाले आखिर कौन सी उलझनों में उलझ के रह गये। अपने वृहद्ध कार्यकाल में विधानसभा चुनाव में पंजाबियत की पहचान लिए चार चार विधायक चुनाव जीते उनको पंजाबियत के बैनर तले प्रदेश के मुखिया सममानित न कर पाने के साथ साथ एक भी आयोजन व प्रयोजन पंजाबी बैनर तले करने में असमर्थ और हताश क्ंयो नजर आ रहे है। क्या इनसे पूर्व अध्यक्षो के कार्यकाल में हरिद्धार कुरूक्षेत्र से लेकर गया जी तक के विशाल पंजाबी महा समागम इनके लिए प्रेरणास्त्रोत नही थे? आखिर क्ंयो पंजाबियत के लोग इस कार्यकाल में अपने को ठगा ठगा असाहय, अबला और लाचार सा समझ रहे है। वो लोग जो पंजाबी मंचो पर पंजाबियों के लिये कसमे खाते थे और यह कहते थे इनकी लड़ाई अन्त तक लड़ी जायेगी। पंजाबियत देश की शान है, पंजाबियत देश की पहचान है, पंजाबियत देश की आजादी में एक हिमालय सा ऊंचा कद रखती है। हम पंजाबी होने का गर्व रखने वाले उन शेरो की दहाड व पहचान आखिर किस मोड़ पर खो गई ? इस विधानसभा में चार चार पंजाबी दिग्गज चुनाव जीते और बहुत सारी सीटों पर अन्य प्रत्याशियों को जिताने का दम भरने वाले वो लोग कंहा गये जो अब जीते हुए प्रत्याशियों को प्रदेश सरकार का हिस्सा तक नही बना सके आखिर अब वो क्ंयो चुप्पी साधे हुए है साथ ही पंजाबियों की हित की बात करने वाले आखिर उन्हे उनका हक दिलाने के लिए धरने, प्रर्दशन व बुलंद आवाज सरकार तक पहुंचाने में असहाय क्ंयो दिख रहे है। कितनी हैरानी वाली बात है कि चार चार पंजाबी विधायकों को विजय श्री प्राप्त होने के बाद भी एक को भी मंत्री नही बनाया गया। इतना ही नही इन विजश्री हासिल करने वालों के सम्मान मे कोई भी स्वागत कार्यक्रम तक आयोजित नही किया गया। जिसके चलते अब यह सवाल उठने लगे हैं कि पंजाबियत का ढोल पीटने वाले और कसमें खाने वाले अब निजी स्वार्थ, निज हित या राजनीति महत्वकांक्षा के कारण अपने पथ से भ्रमित हो चुके है तो ऐसे लोगो को स्ंवय ही पंजाबी नेतृत्व से सन्यास ले लेना चाहिए। इसके अलावा नये प्रदेश नेतृत्व द्वारा कभी भी पंजाबीसभा का आयोजन न करना क्या निष्ठुर होने संदेश नही देता है ? पंजाबियों मे तराई के शेर से पहचाने जाने वाले प्रदेश अध्यक्ष आखिर अब तक क्यों चुप हैं ? पूर्व में उनके द्वारा यह कहा जाता था कि हर पंजाबी जो उत्तराखण्ड़ में रहता है उसकी पहचान उसके अधिकार और सम्मान के लिये वह हमेशा संघर्ष करते रहेगें परन्तु संघर्ष की बात तो बहुत दूर जब से उत्तरांचल पंजाबी महासभा की प्रदेश की बागडोर उन्होने अपने हाथ में ली, मानों पंजाबियत को एक हिमालय सी ऊंचाई तक ले जाकर ही दम लेंगे जबकि हुआ इसका बिल्कुल उल्ट 卐ना तो राम ही मिले न विसाले सनम 卐। यंहा बता दें कि इससे पूर्व उत्तरांचल पंजाबी महासभा के प्रदेश अध्यक्ष राजीव घई के तत्वाधान में हरिद्वार पित्र पत्र में महा पिण्ड दान महान देश के सन्तों द्वारा व देश व प्रदेश के केन्द्रीय मंत्रियों का शामिल होना, एक प्राईवेट ट्रैन लेकर रेलवेमंत्री सुरेश प्रभु जी एंव अन्य नेताओं द्वारा देश के कोने कोने से उन पंजाबियों जो वर्षो से अपनों से बिछड़े मॉ बाप, दादा-दादी, नाना-नानी, बहुत से लोंग पूर्वजों से लेकर दादा दादी तक की गया जी में गति नहीं करा पाये, की कोई साथ नहीं, कोई पता नहीं, कोई जानकारी नहीं ऐसी विशम परिस्थियों में राजीव घई के अथक प्रयासो से एक पूरी ट्रेन केवल पंजाबियों के लिये गया जी पिण्ड दानकर अपने पूर्वजों की मुक्ति हेतु दिल्ली से लेकर गया जी तक ले जाई गयी, इस दौरान नान स्टाप, पूरे सफ्र में खाने-नास्ते की व्यवस्था व गया जी में पांच सितारा होटल में ठहराने की सम्पुर्ण व्यवस्था की गयी थी। देश के महान सन्तों श्री धर्मदेवी जी, श्री श्री जगतगुरू स्वामी हंसानन्द महाराज जी के सानिध्य में गया जी में कराई गयी। इससे पूर्व नानकमत्ता साहिब में पंजाबियत का महा पंजाबी समागम बाबा तरसेम सिंह के साथ मिल उपरोक्त महान संतो के द्वारा बहुत बड़ी पंजाबी यात्रा निकाल

कर पंजाबियों की शान बढ़ाई। उत्तराखण्ड़ के देहरादून पांच सितारा होटल मधुवन में अनेकों पंजाबी सेमिनार कर पंजाबी कोम को इक्ठठा कर अनेक अधिकारों की बात सरकार तक रखी।

इसी तरह पूरे प्रदेश में उत्तराचंल पंजाबी महासभा का गठन देहरादून से लेकर हरिद्वार रूड़की, जसपुर, बाजपुर, से लेकर खटीमा तक ऐसे पंजाबियों का गठन कर अनेकों पंजाबी त्यौहारों की मनाने की झड़ी लगा दी। जिससे मानो पूरा प्रदेश पंजाबीमय हो चला था। किन्तु एक रणनीति के तहत प्रदेश अध्यक्ष पद हथियाकर उस पर कुण्डली मार कर वर्तमान प्रदेश अध्यक्ष मानों कुभकर्ण की नींद में सो गये। इधर प्रदेश के इस बार हुए विधानसभा चुनाव में पंजाबियों का भाजपा को जिताने में पूरे प्रदेश में विषेश योगदान रहा, उसी योगदान के चलते भाजपा की टिकट पर चार विधायक पंजाबी समुदाय के जिसमें सबसे बुर्जग श्री हरबंस कपूर जो सात बार से विधायक बने, चीमा जी तीन बार से, राजकुमार ठुकराल दो बार, प्रदीप बत्रा जैसे पंजाबियों जीत हासिल कर भाजपा का कद बढ़ाया परन्तु एक भी पंजाबी को भाजपा द्वारा कोई भी मंत्री पद से सम्मानित स्थान नहीं दिया गया। उधर पंजाबियों की शान तराई की पहचान से जाने जाने वाले प्रदेश अध्यक्ष ने पंजाबियों को सम्मान दिलाने के लिए न तो कोई भी आवाज उठाई, न कोई आन्दोलन और न ही कोई धरना प्रर्दशन किया आखिर क्यों ? और तो ओर पूर्व प्रदेश स्तरीय नेताओं को अपनी टीम में अमन्त्रित सदस्य तक नहीं रखा गया, क्या इसी सोच से पंजाबी समाज इक्ठठा होगा और पंजाबियत की शान उत्तराखण्ड़ में बच पायेगी ? अब हालात यह है कि समस्त पंजाबी समाज के लोग नेतृत्व परिवर्तन के मूड में हैं अब देखना यह है कि पंजाबियों के हित में क्या जल्द ही प्रदेश नेतृत्व में कोई बदलाव किया जायेगा ?

जनवादी महिला समिति का डीएम कार्यालय पर प्रदर्शन

नगर संवाददाता

देहरादून। बढ़ती शराबखोरी व खाद्यान्न कीमते व राशन में की गई कटौती के विरोध में अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति ने जिलाधिकारी एवं डीएसओ कार्यालय पर प्रदर्शन किया और कहा कि शीघ्र ही कार्यवाही नहीं की गई तो सड़कों पर उतरकर जनांदोलन किया जायेगा। इस दौरान जिला प्रशासन के जरिये मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किया गया।

यहां अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति की महामंत्री इन्दु नौडियाल के नेतृत्व में जिलाधिकारी एवं डीएसओ कार्यालय में इकटठा हुए और वहां पर उन्होंने बढ़ती शराबखोरी व खाद्यान्न कीमते व राशन में की गई कटौती के विरोध में प्रदर्शन किया और कहा कि शीघ्र ही कार्यवाही नहीं की गई तो सड़कों पर उतरकर जनांदोलन किया जायेगा। इस दौरान जिला प्रशासन के जरिये मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किया गया। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि बढ़ती शराबखोरी, महंगा एवं खाद्यान्न की कमी से महिलाओं का संकट भी बढ़ रहा है और परिवारों की शांति भंग हो रही है और इससे जहां कुपोषण बढ़ रहा है वहीं महिलाओं पर हिंसा भी बढ़ रही है। उनका कहना है कि एक ओर शराब के विरोध में आंदोलनरत महिलाओं को सरकारी दमन का सामना कर रही है और उन पर मुकदमें दर्ज किये जा रहे है, यह चिंता का विषय है। उनका कहना है कि खटीमा में शराब विरोधी आंदोलन की नेत्री पार्वती कन्याल के साथ हुई घटना इसका ज्वलंत उदाहरण है जिसमें शराब माफ्यिाओं ने अपने साथियों के साथ मिलकर उनकी जमकर पिटाई की जिसके कारण उनकों गंभीर चोटें आई है और यहां पर पटेलनगर थानें में पांच महिलाओं पर सिर्फ इसलिए मुकदमा दर्ज कर दिया गया क्योंकि वह शराब विरोधी आंदोलन में शामिल थी।

वक्ताओं ने कहा कि पिछली बार आबकारी राजस्व का लक्ष्य 1900 करोड रूपये था जो अब बढाकर 2310 करोड़ रूपये कर दिया गया है और विकास के नाम पर राजस्व कमाने की होड़ में भाजपा सरकार ने शराब के दुष्परिणामों और विशेषत: इसके कारण महिलाओं एवं बच्चों की अनदेखी की है जो चिंता का विषय है। उनका कहना है कि राशन का सवाल भी बेहद अहम है और भरपेट भोजन का हमें संवैधानिक अधिकार है लेकिन सरकार राशन में निरंतर कटौती करने के साथ ही खाद्यान्न की कीमतों में बढोत्तरी कर रही है। एपीएल राशन कार्डों के गेहूं एवं चावल के दाम बढा दिये गये है। उनका कहना है कि गैस भी महंगा हो गया है, दो महीने से चीनी भी नहीं मिल रही है। इस अवसर पर जिला प्रशासन के जरिये मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किया गया। इस अवसर पर समिति के अनेक पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद थे।

संगठन की मजबूती को किया गया विस्तार

नगर संवाददाता

देहरादून। समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष कुलदीप सिंह रावत ने कहा है कि संगठन की मजबूती के लिए व्यापक स्तर पर सदस्यता अभियान चलाया जा रहा है और अधिक से अधिक लोगों को पार्टी में जोडने का काम किया जायेगा। वहीं संगठन का विस्तार भी किया गया है।

यहां परेड ग्राउंड स्थित पार्टी के प्रदेश कार्यालय में पत्रकारों से रूबरू होते हुए रावत ने कहा कि प्राय: सभी राज्य सरकार के अधीनस्थ विभागों में चार पांच माह से बजट की कमी से कर्मचारियों को वेतन भुगतान नहीं किया गया है। उन्होंने कहा कि सरकार के अधीनस्थ आई योजनाओं में दैनिक श्रमिक उपनल के माध्यम से नियुक्तियां की गई है लेकिन भुगतान न होने के कारण उन श्रमिकों, कामगारों को दो जून की रोटी भी मुनासिब नहीं हो पा रही है और बच्चों को भी एडमिशन कराने में लाचारी महसूस कर रहे है। उनका कहना है कि यह हाल तब है जब केन्द्र व राज्य में भाजपा की डबल इंजन के रूप में विराजमान है।

उनका कहना है कि राज्य में पिछले तीन वर्षों से ऋषिकेश से कर्णप्रयाग तक रेलवे सर्वे एवं निर्माण कार्य प्रारंभ न होना राज्य व केन्द्र सरकार की विफ्लता का प्रमाण है और साथ ही मन बहलाने के लिए ही बदरीनाथ धाम से एक नये सर्वे की औपचारिकता सर्वे का उदघाटन भी कर दिया गया है। उनका कहना है कि राज्य में उपनल के माध्यम से नियुक्तियों को स्थनीय बेरोजगार, प्रशिक्षित युवको को ही अवसर दिया जाना चाहिए। भूतपूर्व सैनिकों को पुन: सेवा में नियुक्ति केवल राज्य के प्राथमिक विद्यालयों में सैनिक अनुशासन का पद सृजित करते हुए की जानी चाहिए और प्राथमिक स्तर का विद्यार्थी अनुशासित होकर सैन्य सेवा हेतु भी प्रशिक्षित हो जायेगा, वर्तमान केन्द्र सरकार की नीतियों से पूरे देश में भय का वातावरण बना हुआ है और जम्मू कश्मीर की ताजा घटनायें इसका प्रमाण है।

उनका कहना है कि राज्य को पर्यटन के क्षेत्र में स्थानीय निवासियों को प्रशिक्षित करते हुए राज्य सरकार की सेवा में प्राथमिकता देनी चाहिए जिससे पर्यटन में मददगार के साथ ही पलायन पर भी अंकुश लगेगा। उनका कहना है कि संगठन का व्यापक स्तर पर विस्तार किया गया है और आने वाले समय में और विस्तार होगा। इस अवसर पर पार्टी के अनेक पदाधिकारी मौजूद थे।

हाईटेक युग मे गुजरे जमाने की सुनहरी याद बना दूरदर्शन

बादशाह खान शाहरुख भी रहे हैं दूरदर्शन की देन

अमित सूरी

ऋषिकेश। सोशल मीडिया के मोजूदा दौर मे भी टेलीविजन का प्रभाव बना हुआ है।हांलाकि यह दीगर बात है कि दूरदर्शन की जगह अब सेट अप बॉक्स और केबल टीवी ने ले ली है।विडम्बना यह भी है कि देश मे मनोरंजन की शुरूवात सही मायनों मे दूरदर्शन के जरिए ही हुई थी ,जिसके बारे मे मोजूदा दौर की युवा पीढ़ी को बेहद मामूली जानकारी ही देखने को मिलती है।इतिहास पर नजर दोड़ाए तो दूरदर्शन का पहला प्रसारण 15 सितंबर, 1959 को प्रयोगात?मक आधार पर आधे घण?टे के लिए शैक्षिक और विकास कार्यक्रमों के रूप में शुरू किया गया था। उस समय दूरदर्शन का प्रसारण सप्ताह में सिर्फतीन दिन आधा-आधा घंटे होता था। तब इसको 'टेलीविजन इंडिया' नाम दिया गया था बाद में 1975 में इसका हिन्दी नामकरण 'दूरदर्शन' नाम से किया गया। यह दूरदर्शन नाम इतना लोकप्रिय हुआ कि टीवी का हिंदी पर्याय बन गया।

शुरुआती दिनों में दिल्ली भर में 18 टेलीविजन सेट लगे थे और एक बड़ा ट्रांसमीटर लगा था। तब दिल्ली में लोग इसको कुतुहल और आश्चर्य के साथ देखते थे। इसके बाद दूरदर्शन ने धीरे धीरेअपने पैर पसारे और दिल?ली (1965)य मुम?बई (1972)य कोलकाता (1975), चेन्नई (1975) में इसके प्रसारण की शुरुआत हुई। शुरुआत में तो दूरदर्शन यानी टीवी दिल्ली और आसपास के कुछ क्षेत्रों में ही देखा जाता था। दूरदर्शन को देश भर के शहरों में पहुँचाने की शुरुआत 8० के दशक में हुई और इसकी वजह थी 1982 में दिल्ली में आयोजित किए जाने वाले एशियाई खेल थे। एशियाई खेलों के दिल्ली में होने का एक लाभ यह भी मिला कि श्वेत और श्याम दिखने वाला दूरदर्शन रंगीन हो गया था। फिर दूरदर्शन पर शुरु हुआ पारिवारिक कार्यक्रम हम लोग जिसने लोकप्रियता के तमाम रेकॉर्ड तोड़ दिए। 1984 में देश के गाँव-गाँव में दूरदर्शन पहुँचानेके लिए देश में लगभग हर दिन एक ट्रांसमीटर लगाया गया। इसके बाद आया भारत और पाकिस्तान के विभाजन की कहानी पर बना बुनियाद जिसने विभाजन की त्रासदी को उस दौर की पीढ़ी से परिचित कराया। इस धारावाहिक के सभी किरदार आलोक नाथ (मास्टर जी), अनीता कंवर (लाजो जी), विनोद नागपाल, दिव्या सेठ घर घर में लोकप्रिय हो चुके थे। फिर तो एक के बाद एक बेहतरीन और शानदार धारवाहिकों ने दूरदर्शन को घर घर में पहचान दे दी।

दूरदर्शन पर 1980 के दशक में प्रसारित होने वाले मालगुडी डेज, ये जो है जिन्दगी, रजनी, ही मैन, वाह: जनाब, तमस, बुधवार और शुक्रवार को 8 बजे दिखाया जाने वाला फिल्मी गानों पर आधारित चित्रहार, भारत एक खोज, व्योमकेश बक्शी, विक्रम बैताल, टर्निंग प्वाइंट, अलिफ लैला, शाहरुख खान की फौजी, रामायण, महाभारत, देख भाई देख ने देश भर में अपना एक खास दर्शक वर्ग ही नहीं तैयार कर लिया था बल्कि गैर हिन्दी भाषी राज्यों में भी इन धारवाहिकों को जबर्दस्त लोकप्रियता मिली। रामायण और महाभारत जैसे धार्मिक धारावाहिकों ने तो सफलता के तमाम कीर्तिमान ध्वस्त कर दिए थे, 1986 में शुरु हुए रामायण और इसके बाद शुरु हुए महाभारत के प्रसारण के दौरान रविवार को सुबह देश भर की सड़कों पर कर्फ्यू जैसा सन्नाटा पसर जाता था और लोग अपने महत्वपूर्ण कार्यक्रमों से लेकर अपनी यात्रा तक इस समय पर नहीं करते थे। रामायण की लोकप्रियता का आलम तो ये था कि लोग अपने घरों को साफ-सुथरा करके अगरबत्ती और दीपक जलाकर रामायण का इंतजार करते थे और एपिसोड के खत्म होने पर बकायदा प्रसाद बाँटा जाता था।लेकिन इन सबके बीच यर्थाथ की सच्चाई यही है कि दूरदर्शन का जमाना इस हाईटेक युग मे बाबा आदम के जमाने की किस्से कहानियां बनकर बनकर रह गया है।

विधानसभा अध्यक्ष के जन्म दिवस समारोह को यादगार बनाने मे जुटे भाजपाई

ऋषिकेश। विधानसभा अध्यक्ष प्रेम चन्द अग्रवाल के जन्म दिवस समारोह को एक इवेन्ट का रूप देने मे भाजपा कार्यकर्ता और उनके कट्टर सर्मथक शिद्दत के साथ जुटे हुए हैं।ऋषिकेश विधानसभा सीट से जीत की हैट्रिक लगाकर विधानसभा के सर्वोच्च पद तक पहुंचे क्षेत्रीय विधायक अग्रवाल के जन्म दिवस समारोह को लेकर यहाँ पार्टी कार्यकर्ताओ मे जबरदस्त उत्साह का माहौल है।इसकी बानगी यहाँ समर्थको द्वारा समूचे विधानसभा क्षेत्र मे अपने प्रिय विधायक को जन्म दिवस की शुभकामना को लेकर लगाये गये बड़े होल्डिगों से की जा सकती है।भाजपा सूत्रो से मिली जानकारी के अनुसार विधासभा अध्यक्ष की दीघ्रायू की मनोकामना को लेकर नगर की हद्वय स्थली त्रिवेणी घाट मे विशेष गंगा आरती का आयोजन किया जाएगा ,जिसमे वह परिवार सहित सम्मिलित होगें।इससे पूर्व सुबह विधानसभा अध्यक्ष कुष्ट आश्रम मे पहुंच अपने जन्म दिवस के मौके पर कुष्ट रोगियो को फल वितरित करेगें।उनके कट्टर समर्थको द्वारा अनेको स्थानो पर कैक सैरेमनी के आयोजन की भी जानकारी मिली है।बताया जा रहा है इन तमाम आयोजनों मे भी विधानसभा अध्यक्ष प्रेम चन्द अग्रवाल शिरकत करेंगे।बताते चले कि कल विधानसभा अध्यक्ष अपना 57वां जन्म दिवस मनायेगें।महत्वपूर्ण यह भी है क्षेत्रीय विधायक होने के नाते पिछले दस वर्षो से भाजपा कार्यकर्ता उनका जन्म दिवस मनाते रहे हैं,लेकिन इस बार विधानसभा अध्यक्ष होने के नाते उनके जन्म दिवस समारोह को लेकर कुछ अलग ही उत्साह की लहर भाजपाईयो मे देखने को मिल रही है

द्रोण नगरी मे आयोजित होगी प्रेसको आर्ट कार्यशाला

ऋषिकेश। सोसाईटी ऑफ पोल्यूशन एण्ड इन्वायरमेंट व डा हरिओम गुप्ता शिक्षा एवं पर्यटक संस्थान के संयुक्त तत्वावधान मे प्रेसको आर्ट वर्कशाप का आयोजन किया जाएगा।आगामी 27 मई से लेकर 4 जून तक राजधानी देहरादून मे आयोजित होने वाली कार्यशाला मे सुप्रसिद्व प्रेसको कलाकार प्रशिक्षुओ को ट्रेनिगं देंगे। उक्त जानकारी देते हुए देश के बेहद प्रतिष्ठित तकनीकि शिक्षण संस्थान वनस्थली से जुड़ी डा सुरभि गुप्ता ने पत्रकारों को जानकारी देते हुए बताया कि उत्तराखण्ड मे प्रेसको आर्ट को बड़ावा देने के लिए विभिन्न संस्थाओ के अनुरोध पर नो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जा रही है।इस दौरान प्रदर्शनी के माध्यम से इस हस्त शिल्प कला के इतिहास और इसकी बारीकियो के बारे मे आम जनता को जानकारी दी जाएगी वहीं कार्यशाला के जरिए इस कला मे पारंगत बनाने के लिए विशेषज्ञो द्वारा प्रशिक्षुओ को खासतौर पर ट्रेनिंग दी जाएगी।ताकी भविष्य मे इसे वह स्वरोजगार के तौर पर भी अपना सके।

शंकराचार्य विवाद पर हरिद्वार में धर्म संसद बुलाने का आह्वान

हरिद्वार। ज्योतिष पीठाधीश्वर शंकराचार्य वासुदेवानंद, द्वारका शारदा पीठाधीश्वर शंकराचार्य अच्युतानंद तीर्थ और काशी सुमेरू पीठाधीश्वार शंकराचार्य नरेंद्रानंद सरस्वती ने आरोप लगाया कि स्वरूपानंद सरस्वती किसी पीठ के शंकराचार्य नहीं है, वे जबरन दो पीठों पर बैठे हुए हैं।

इस दौरान शंकराचार्य विवाद पर धर्म संसद बुलाने का आह्वान किया गया। हरिद्वार में मंगलवार को पत्रकारों से बातचीत में तीनों संतों ने कहा कि बहुत जल्द ही हरिद्वार में धर्म संसद बुलाई जाएगी। इसमें देशभर के संतों को आमंत्रित कर शंकराचार्यो का फैसला कर दिया जायेगा। तीनों संतों ने यह भी आरोप लगाया कि अखाड़ा परिषद का कोई संविधान नहीं है। उसे किसी तरह का कोई अधिकार नहीं है। कुंभ में स्नान की व्यवस्थाओं को बनाने के लिए ही अखाड़े बने हैं। इस दौरान तीनों संतों ने अखाड़ा परिषद पर कुछ गंभीर आरोप भी लगाए गए। बता दें कि संतों के बीच कई दिनों से शंकराचार्य पद को लेकर विवाद चल रहा है। इसे लेकर अखाड़ा परिषद की ओर से तरह-तरह के बयान आ रहे थे। इसके परिपेक्ष में तीनों संतों ने पत्रकार वार्ता बुलाकर जवाब दिया।

ग्रामीण क्षेत्र मे अतिक्रमणकारियो के खिलाफजनप्रतिनिधियो ने मोर्चा खोला

ऋषिकेश। ग्रामीण क्षेत्रों मे अतिक्रमणकारियो पर नकैल कसने के लिए जनप्रतिनिधियो ने संघर्ष का बिगुल फूंक दिया है।आंदोलन को धार देने के लिए ग्रामीणो को भी विश्वास मे लिया जा रहा है।बापूग्राम पंचायत घर मे आज जनप्रतिनिधियो एवं क्षेत्रवासियो की एक महत्वपूर्ण बेठक सम्पन हुई।

बेठक मे बापूग्राम मुख्य मार्ग को अतिक्रमण से मुक्त कराने का सर्व सम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया। बेठक को सम्बोधित करते हुए भाजपा नेता रवीन्द्र राणा ने कहा कि बापूग्राम मुख्य मार्ग पर अतिक्रमण नासूर बन चुका है।

अतिक्रमणकारियो पर कारवाई की मांग को लेकर जनप्रतिनिधि आगामी 25 को लोनिवि अधिकारियो और पुलिस प्रशासन से मिलकर उन्हे इस और कारवाई के लिए तीन दिन का अल्टीमेटम देंगे।

प्रशासनिक हीलहवाली की सूरत मे आंदोलन को ओर गति दी जाएगी। उप प्रधान श्रीमती गीता देवी की अध्यक्षता व दिनेश बिष्ट के संचालन मे चली बेठक मे वार्ड सदस्य ममता नेगी ,माया घले, शकुन्तला बिष्ट, बरहमी देवी, त्रिलोक सिंह, महिपाल सिंह, अविनाश सेमलटी, राजेश राजपूत, देवेन्द्र कणडवाल, बालम सिंह, राज कुमार शर्मा, संजय चौधरी, रमेश जुगलान, चंदन सिंह, आशु नेगी, आत्मा राम, सानू शर्मा, दीपक बिष्ट आदि उपस्थित थे।

रिया कपूर ने सोनम की इस योजना का किया खुलासा

अपने बेहतर फैशन सेंस के लिए जानी जाने वाली अभिनेत्री सोनम कपूर ने बहन रिया कपूर के साथ अपना पहला फैशन ब्रांड 'रीसन' लांच किया। रिया ने इस बात का खुलासा किया कि इस ब्रांड को लाने की योजना सोनम की थी। लांच कार्यक्रम में रिया से जब पूछा गया कि इसे लाने की योजना किसकी थी तो उन्होंने फौरन कहा कि यह सोनम की योजना थी। रिया के मुताबिक, 'अपने प्रचार के लिए सोनम से कई ब्रांडों ने संपर्क किया। वे सोनम के साथ डिजाइन और फैशन लाइन शुरू करना चाहते थे, लेकिन फिर सोनम ने मेरे पास आकर कहा, 'चलो खुद का ब्रांड लांच करते हैं'।' रिया ने बताया कि वह भी इस ब्रांड का हिस्सा हैं।

सांध्य दैनिक
क्राईम स्टोरी
website: www.crimestory.in
देहरादून
मंगलवार, 23 मई 2017

सुनार को ठगने वाले दबोचे

यादवेन्द्र बाजवा ने फिर मनवाया अपना लोहा

देहरादून। नेहरू कालोनी के बैंक कालोनी केदारपुर में एक सुनार से तीन किलो सोना ठगने वाले ठगों को पकडना पुलिस के लिए एक बडी चुनौती बना हुआ था क्योंकि दुकानदार को इस बात का तिनका भर भी ईल्म नहीं था कि ठगी करने वाले ठग कहां के हैं। पुलिस कप्तान ने ठगों को दबोचने की कमान एसपी सिटी को सौंपी तो उन्होंने नेहरू कालोनी के एसएसआई के नेतृत्व में पुलिस की एक टीम ठगों को दबोचने के लिए मैदान में उतारी और एसएसआई ने सुरागरस्सी के बाद तीन ठगों को उस समय कार से दबोच लिया जब वह किसी सुनार को ठगने के लिए जा रहे थे। पुलिस ने उनके कब्जे से एक किलो 600 ग्राम सोना और स्विफ्ट डिजायर कार बरामद की है।

पुलिस कप्तान निवेदिता कुकरेती ने पत्रकारों से रूबरू होते हुए बताया कि विगत 24 अप्रैल को नेहरू कालोनी के बैंक कालोनी केदारपुर में सुनार सचिन रस्तोगी से कुछ लोगों द्वारा ठगी कर 3 किलो सोना ठग कर ले गये थे जिनके बारे में सुनार को कोई जानकारी नहीं थी क्योंकि मध्यस्थ मंजीत सिंह पुत्र खेम सिंह नि० मिस्सर वाला थाना डोईवाला के द्वारा वह उन लोगों के सम्पर्क में आया था। कप्तान ने बताया कि सचिन के परीचित अरुण सैनी जो कि मंजीत के भी मित्र है उनके द्वारा बताया गया था कि वे 5 किलो सोने की व्यवस्था करें तो सचिन ने 3 किलो सोने की व्यवस्था करवायी और अजबपुर चौक पर पहुंचे तो वहां स्विफ्ट कार में कुछ लोग बैठे थे। कप्तान ने बताया कि सचिन को बताया किया कि उनके पास इस बैग में 150,00000 (डेढ करोड रुपये) हैं और वह सोना दे दें। उन्होंने बताया कि सचिन ने अपने मित्र अरुण सैनी, मंजीत व अभिषेक जैन के सामने कार में बैठे

एसपी सिटी ने टीम को उतारा था मैदान में

लोगों को सोना देकर रुपयों का बैग ले लिया तथा जब बैग लेकर अपनी दुकान में गया तो उसे खोल कर देखा तो ऊपर एक-एक नोट 2000 का था व नीचे सफेद कागज की गड्डी थी व नीचे कापी व रजिस्ट्र निकले थे। उन्होंने बताया कि घटना के खुलासे की कमान पुलिस अधीक्षक नगर प्रदीप राय को सौंपी गई तो उन्होंने नेहरू कालोनी थाने के एसएसआई यगवेन्द्र वाजवा के नेतृत्व में पुलिस व एसओजी की टीम को मैदान में उतारा। एसएसआई वाजवा ने ठगों की तलाश तेज की और सविलांस के सहारे ठगों तक पहुंचने में कामयाबी हासिल की। पुलिस कप्तान ने बताया कि देर रात मुखबिर की सूचना पर गुरुदीप उर्फदीप्पा नि० कुरुक्षेत्र ,साहब सिंह उर्फसाबा नि० कुरुक्षेत्र ,गुरजन्ट उर्फ मिद्धू नि० पटियाला को अगली घटना को अन्जाम देने से पूर्व कुरुक्षेत्र से वारदात में प्रयुक्त वाहन स्विफ्ट डिजायर नं० एचआरआई 5 सी -5773 के साथ गिरफ्तार किया गया जिनके कब्जे से 1.600 ग्राम ठगा गया सोना व नकलीनुमा सफेद नोट के 16 बन्डल ,12 रजिस्टर बरामद किये गये। कप्तान ने बताया कि तीनों अभियुक्त शातिर किस्म के अपराधी ठग हैं। जिनके विरुद्ध पंजाब व हरियाणा में कई मुकदमें दर्ज हैं।

कप्तान ने बताया कि गुरदीप उर्फदिप्पा से लगभग 800 ग्राम सोना व नकली क्ध्स् बरामद हुये जबकि साहब सिंह उर्फसाबा से लगभग 345 ग्राम सोना व नकली डीएल बरामद हुये तथा गुरजन्ट उर्फ मिद्धू से लगभग 460 ग्राम सोना बरामद किया गया है। इस गुडवर्क का हीरो एसएसआई यादवेन्दर वाजवा ही माना जा रहा है जिन्होंने कैंट कोतवाली में भी अपराधियों के खिलाफनकेल लगा रखी थी।

कमजोर टीम से कप्तान
अपराधियों पर कैसे लगायेंगी लगाम

पुलिस के भेदिये कर रहे सूचनायें लीक

देहरादून। राजधानी में नई पुलिस कप्तान को मैदान में उतारा गया है और एसपी सिटी व एसपी देहात भी जनपद के लिए नये हैं। जनपद में चंद चौकी व थानों में कमजोर टीम होने से अपराध का ग्राफबढ़ रहा है और दबंग दरोगाओं को हाशिये पर रखा गया है जिससे सवाल उठ रहा है कि क्या राजधानी की नई पुलिस कप्तान कमजोर टीम के सहारे अपराधियों से जंग लड़ पाएंगी? एक ओर तो जनपद में चंद चौकी व थानों में कमजोर टीम कप्तान के लिए बडी चुनौती हैं तो वहीं पुलिस के चंद भेदिये भी कप्तान के लिए काफी घातक हैं क्योंकि महकमें की गुप्त सूचनायें लीक करने और गुडवर्क को बैडवर्क बनाने का जो खेल चल रहा है उस पर अगर नकेल न लगाई गई तो कप्तान की बनाई गई सब गुप्त रणनीति भी तार-तार होती रहेंगी?

उल्लेखनीय है कि जनपद के चंद थाने व चौकियों में कमजोर दरोगाओं की तैनाती हो रखी है और वह अपराधियों पर नकेल लगाने में भी सक्ष्म नहीं दिख रहे हैं। ऐसे में जनपद की नई पुलिस कप्तान अपनी कमजोर टीम के सहारे कैसे अपराधियों पर नकेल लगा पायेगी यह एक बडा सवाल पुलिस महकमें में उठने लगा है। हैरानी वाली बात है कि आधा दर्जन से अधिक दबंग दरोगा हाशिये पर हैं और उन्हें थाने व चौकियों के प्रभारियों से दूर रखा गया है यह काफी हैरान करने वाली बात है।

एक ओर तो नई पुलिस कप्तान के सामने अपराधियों व नशा तस्करों से जंग लडने की बडी चुनौती है तो वहीं यातायात को पटरी पर लाना भी उनके लिए आसान काम नहीं है। राजधानी की पुलिस कप्तान की टीम में चंद भेदिये भी उनके लिए घातक हो सकते हैं क्योंकि पुलिस के चंद बडे गुडवर्क को जिस तरह से लीक कर उसे बैडवर्क बनाने का खेल शुरू हो गया है वह पुलिस कप्तान के लिए शुभ संकेत नही है? नई पुलिस कप्तान तो अपनी टीम में उन भेदियों को भी खोजना होगा जो महकमें के गुडवर्क पर ग्रहण लगाने के लिए पहले ही सूचनाओं को लीक करने का खेल खेलने में जुटे हुए हैं। शहर में जिस तेजी के साथ चोरी, ठगी व लूट की वारदातें एकाएक बडी हैं वह साफसंकेत दे रही है कि जनपद की नई पुलिस कप्तान की टीम में कुछ कमजोर दरोगा शामिल हैं जिनके रहते हुए अपराधों पर रोक लगाना उनके लिए बडी चुनौती ही होगा?

क्यों सुलग रही
माओवाद की चिंगारी?

अल्मोड़ा। उत्तराखंड में लगातार माओवादियो की घटना होती जा रही है। माओवाद क्या है आखिर? कौन लोग है? क्या है माओवाद? क्या कहते है यह? इन सभी सवालो को सरकार ने नजर अंदाज किया हुआ है। माओवादियो को ले कर आज सभी लोगो को यही जानना है आखिर क्यों बढ़ती जा रही है यह घटना? सरकार के विरोधी नही होते हुए भी सरकार से किस बात की मांग को लेकर रोज हंगामा हो रहा है? सरकार की शराब की नीति को लेकर जहाँ महिलाओं और जनता लगातार विरोध कर रहे है, और फिर इस मुद्दे के साथ रोजगार की सही मांग को ले कर माओवादी लोग सरकार से शराब बंदी और रोजगार की मांग को करते जा रहे है। सरकार जितना सरल इन माओवादियो को ले रही है कही इनकी आग के आगे उत्तराखंड को जलना न पड़ जाए? कश्मीर के जैसे हालात न झेलने पड़े कही उत्तराखंड को? क्यों नही समझ पा रही है सरकार? जब ये लोग मंत्री के ग्रह क्षेत्र में और तहसीलदार की गाड़ी को आग लगा सकते है तो क्या उत्तराखंड को कश्मीर बनने में समय नही

लगेगा? सरकार को यह नही समझ आ रहा है कि जब जनता की मुद्दों पर माओवादियो का नाम और उसके बाद खुले शब्दो में हम लोकल के है न की नेपाल से आये कहना साफबताता है कि माओवाद की जड़े अब उत्तराखंड की जमीन में भी पैदा हो गई है। सरकार जिसे बहुत हल्का समझ के बैठी है वो एक बड़े धमाके का रूप कब बन जाएंगे शायद सरकार समझ तक न पाए। लोकल के मुद्दे और लोकल के लोग का माओवादी लोगो के साथ होना एक बड़े संकट का आगाज़ नजर आता है, पर सरकार के आँख कान क्यों बंद है? ये समझ नही आता। आखिर सरकार की खुफ़िया एजेंसियां कहाँ है? क्या खुफ़िया एजेंसियां और विभाग केवल मुख्यमंत्री,मंत्री और अन्य लोगो की चापलूसी के लिए ही रह जाएगी? क्या कर रही है खुफ़िया एजंसियां आखिर सरकार ने उनके कामो की जानकारी क्यों नही रखी? सरकार लाखो रूपये हर माह किस बात के इस विभाग को दे रही है? सरकार ये क्यों भूल गई की जनता की सुरक्षा और मांग भी सरकार का ही काम है। क्या हो जाता है सरकार को जब जनता का कोई मुद्दा उसके सामने आता है। सरकार अपने मंत्रियो और विधायको की एक मांग या एक काम को मना करने पर ईमानदार से ईमानदार अधिकारी को भी रातो रात तबादल करने से नही चुकती है, पर सरकार को क्या माओवादियो का इतिहास याद नही है कि वो क्या कर जाते है? यह वही माओवादियो है जो नेपाल और पश्चिमी बंगाल में कई बार सरकारो को तक गिरा चुके है। सरकार शायद उत्तराखंड को कश्मीर और नेपाल जैसा बनाना चहती है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक राजेश शर्मा द्वारा इंटर ग्राफिक प्रिंटर्स, 64-नेशविला रोड, देहरादून, उत्तराखण्ड से मुद्रित, 142 श्रीदेव सुमन नगर बल्लूपुर रोड देहरादून से प्रकाशित।
सम्पादक : राजेश शर्मा मो.- 9897598151, **प्रबंध सम्पादक :** अभिषेक शाही मो.- 9897865003 कानूनी सलाहकार: प्रकाश टी पाल **E-mail ID:** crimestory.dial100@gmail.com नोट: समस्त विवाद देहरादून न्यायालय के अधीन ही होंगे।